आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 11 जुलाई, 2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

पशुओं का उत्तम स्वास्थ्य प्रबंधन उत्पादकता की गारंटी

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयों और बहनों।

राम–राम सा।

हमारे देश में पशुपालन कार्य अधिकतर गांवों में किसानों, अशिक्षित मजदूरों और महिलाओं द्वारा किया जाता है। प्रायः इन्हें पशुओं की देखभाल के सम्बन्ध में पर्याप्त वैज्ञानिक जानकारी नहीं होती। पालतू पशुओं का स्वास्थ्य प्रबंधन सही रखकर पशुधन उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। आज के समय में समाज के पढ़े–लिखे लोग सोशल मीडिया तथा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से जैविक पशुधन उत्पाद की महत्ता को भली–भांति समझने लगे हैं और परिणामस्वरूप आज जैविक पशुधन उत्पाद की मांग दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। ऐसे उत्पाद तैयार करने के लिए लोग तीन गुणा मूल्य भी चुकाने के लिए तैयार हैं। किसान और पशुपालक जैविक पशुधन सह कृषि का उत्पादन करके ज्यादा से ज्यादा आमदनी ले रहे हैं। जैविक पशुधन में पशु उपचार के बचाव पर जोर दिया जाता है इसमे पशुओं का कल्याण व पर्यावरण की कम हानि भी निहित है। इससे पशु तनाव से मुक्त रहकर अपना नैसर्गिक व्यवहार प्रकट करते हैं और उच्च गुणवत्ता युक्त आहार भी आसानी से लेते हैं। पशुओं का आहार प्रबंधन ऐसा होना चाहिए जिससे पशुपोषण की जरूरतों को पूरा कर उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि हो सके। पशु आहार सस्ता, स्वादिष्ट व पौष्टिक होना चाहिए। कई प्रकार के दलहनी व गैर दलहनी भोज्य पदार्थों का समावेश होना चाहिए। आहार के अवयव बारह महीनें आसानी से मिलने वाले होने चाहिए। ''हे'' तथा साइलेज द्वारा चारे का परिवहन एवं भंण्डारण किया जा सकता है। इसके लिए वेटरनरी महाविद्यालय अथवा जिलों में स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर पूरी जानकारी ली जा सकती है। पशु स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए रोगों की पहचान कर रोगाणुओं का पता करके उनके जीवन चक्र को समझना जरूरी है। पशुओं का उपचार करने की बजाय ऐसे तरीके अपनाएं जिससे रोगाणु का जीवन चक्र तोड़ा जा सके। नए पशुओं की खरीद के समय संक्रामक बीमारियों से मुक्त होने का प्रमाण–पत्र प्राप्त कर लें। पशु आवास पशु की जैविक, भौतिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला होना चाहिए। पशु के आहार में पोषक तत्वों की कमी की स्थिति में लवण खिलाना चाहिए। पशु के स्वस्थ और निरोग होने पर ही वह अपनी क्षमता के अनुरूप उत्पादन दे सकता है। पशुओं की बीमारी से उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है एवं उत्पादकता घट जाती है तथा मनुष्य में संक्रमण भी हो सकता है। अतः पशु स्वास्थ्य प्रबंधन को पूरी तरह अमल में लाएं और अधिक उत्पादकता पाएं।

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

राजुवास और एम.पी.यू.ए.टी. के मध्य एम.ओ.यू
शिक्षा और अनुसंधान में आपसी करार

वेटरनरी विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर ने 19 जून को शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में आपसी सहयोग और समन्वय के लिए एक करार (एम.ओ.यू.) किया। ऑनलाइन कान्फ्रेंस के माध्यम से वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और एम.पी.यू.ए.टी. के कुलपति प्रो. एन.एस. राठौड़ ने ऑनलाइन करार पर हस्ताक्षर कर दस्तावेज एक–दूसरे को प्रेषित किए। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि कृषि और पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं। इस करार के हो जाने से दोनों ही विश्वविद्यालय के शोधार्थी और शिक्षक पशुपालन और कृषि के क्षेत्र में एक–दूसरे के यहां तकनीकी संसाधनों का उपयोग कर गुणवत्तायुक्त जैविक उत्पादन और नवीन तकनीक व प्रौद्योगिकी को जानने व साथ कार्य करने का अवसर मिलेगा। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को अपने अनुसंधान कार्यों के साझा रूप में करने के सुखद परिणाम किसान और पशुपालक समुदाय के लिए लाभकारी होंगे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. एन.एस. राठौड़ ने कहा कि विश्वविद्यालयों के आपसी करार से मिलजुलकर कार्य विद्यार्थियों, शिक्षकों, किसान व पशुपालकों के हित में रहेगा। इस अवसर पर वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह, अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमंत दाधीच, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एस.सी. गोस्वामी, विशेषाधिकारी डॉ. गोविन्द सिंह और आई.यू.एम. एस. प्रभारी डॉ. अशोक डांगी मौजूद थे।

ऑनलाइन पशुपालक चौपाल
किसान-पशुपालक बैंकर्स से हुए रूबरू

वेटरनरी विश्वविद्यालय में 26 जून को प्रसार शिक्षा निदेशालय और नाबार्ड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ऑनलाइन "पशुपालक चौपाल" में राष्ट्रीयकृत और सहकारी बैंकों के आला अधिकारी पशुपालकों से रूब–रू हुए। चौपाल में बैंक अधिकारियों ने बैंक ऋण द्वारा पशुपालन को व्यवसाय को आत्मनिर्भर बनाने की जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि कोविड–19 महामारी के दौर में डिजिटल चौपाल किसानों और पशुपालकों से जुड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। पशुपालन की विभिन्न योजनाओं खासतौर पर खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देने में बैंकर्स का बड़ा योगदान हो सकता है। चौपाल में मुख्य अतिथि नाबार्ड जयपुर के मुख्य महाप्रबंधक जयदीप श्रीवास्तव ने बताया कि बैंक ग्रामीण क्षेत्र में किसान, पशुपालकों और महिलाओं को संगठित करके आधारभूत सुविधाओं के लिए ऋण और सहायता सुलभ करवा रहा है। किसान को पशुपालन के साथ साथ घास/ चारा तथा अन्य संसाधनों हेतु कार्यशील पूँजी के रुप में जारी किसान क्रेडिट कार्ड से होने वाले लाभ को भी विस्तार से पशुपालकों को बताया। केन्द्रीय सहकारी बैंक, बीकानेर के प्रबंध निदेशक रणवीर सिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में पशुपालकों को डेयरी संघ के माध्यम से ऋण योजनाओं और पशु खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना और सुविधाओं की जानकारी दी। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सहायक महाप्रबंधक अनिल सहाय ने राज्य में 1300 बैंक शाखाओं के मार्फत किसान क्रेडिट कार्ड, स्वयं सहायता समूह और पशुपालकों को सहायता एवं छोटे ऋण बाबत जानकारी दी। चौपाल में राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक एस.एस. गहलोत ने ग्रामीण क्षेत्र में बैंक द्वारा दी जा रही सहायता और ऋण सुविधाओं से अवगत करवाया। नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधक रमेश ताम्बिया ने किसानों को उत्पादक संगठन बनाकर, स्वयं सहायता समूह के रुप में तथा छोटे किसानों द्वारा संयुक्त देयता समूह बनाकर बैंक से जुडने की जानकारी दी। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने पशुपालन चौपाल का संयोजन करते हुए बताया कि ग्रामीण और राष्ट्रीयकृत बैंकों की ऋण सुविधा और सहायता योजनाओं से चौपाल के माध्यम से हजारों किसान– पशुपालक लाभान्वित हुए। इस चौपाल का विश्वविद्यालय के फेसबुक पेज पर सीधा प्रसारण किया गया जिसे पशुपालकों ने बड़ी संख्या में देखा और सुना।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोन्सीबिलिटी

जयमलसर में कोरोना बचाव व नियंत्रण शिविर आयोजित

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोन्सीबिलिटी (यू.एस.आर.) के तहत गोद लिए गांव जयमलसर में 18 जून को कोरोना बचाव एवं नियंत्रण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के अर्न्तगत ग्रामवासियों को काढ़ा पिलाया गया और मास्क वितरित कर सार्वजनिक भवनों को सैनेटाइज किया गया। ग्राम पंचायत भवन में आयोजित शिविर में वेटरनरी विश्वविद्यालय कुलसचिव अजीत सिंह राजावत ने काढ़ा पिलाकर शिविर का शुभारंभ किया। इस अवसर पर कुलसचिव राजावत ने ग्रामवासियों को कारोना महामारी के मद्देनजर सामाजिक दूरी बनाए रखकर बचाव उपायों को गंभीरता से अपनाने का आह्वान किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में कोविड–19 महामारी के प्रति जागरूकता लाने के लिए इस शिविर का आयोजन किया गया है। प्रो. धूड़िया ने बताया कि गांव के पंचायत भवन, विद्यालय भवन, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र सहित प्रमुख चौपालों को कोरोना से बचाव के मद्देनजर सैनेटाईज कर ग्रामीणों को जागरूक किया गया। शिविर के दौरान साबुन और मास्क का वितरण भी किया गया। आयुर्वेद अधिकारी डॉ. अशोक गर्ग और टीम ने सामाजिक दूरी बनाए रख कर लगभग 500 बच्चों, महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों को रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए काढ़ा पिलाया। इस कार्य में ग्राम पंचायत द्वारा सहयोग किया गया। इस अवसर पर पंचायत समिति के विकास अधिकारी भोमसिंह इंदा, पंचायत की ग्राम विकास अधिकारी शकुंतला यादव, पूर्व सरपंच पवन रामावत, गोविन्द सिंह भाटी, प्रभु सिंह सहित जयमलसर गांव के प्रबुद्धजन मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन राजुवास के ग्राम समन्वयक डॉ. नीरज शर्मा ने किया।

वीयूटीआरसी, रतनगढ़ (चूरू)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 10, 12 एवं 19 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 32 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 8, 10, 15 एवं 22 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 99 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, सिरोही

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 16 एवं 22 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 32 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 12, 18 एवं 27 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 43 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कुम्हेर (भरतपुर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 16, 23 एवं 26 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 49 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, टोंक

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 11, 16 एवं 20 जून को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 37 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 10, 16, 20 एवं 23 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 79 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 12, 17, 22 एवं 25 जून को ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बोजुन्दा (चितौड़गढ़)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 10, 17, 20 एवं 24 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 12, 19 एवं 23 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 45 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, अजमेर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 17, 19, 22, 24, 25 एवं 27 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 99 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 8, 11, 16 एवं 23 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 50 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 5, 16 एवं 25 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 32 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 9, 12, 15 एवं 22 जून को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 59 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 1, 4, 25 जून को ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविर में 39 किसानों ने भाग लिया।

जुलाई माह में भेड़–बकरियों को रोगों से बचायें

इस वर्ष मानसून सही समय पर प्रदेश में दस्तक दे रहा है और इसके सामान्य रहने की आंशका जताई जा रही है। जून के अन्तिम दिनों में प्रदेश के कुछ दक्षिणी जिलों में मानसून पूर्व की वर्षा हो चुकी है और कई जिलों में मानसून भी आ चुका है। इस प्रकार ग्रीष्म काल के बाद आई वर्षा से राज्य के अधिकतर भाग में इस माह तक हरे घास व चारे की उपलब्धता हो जाती है। भेड़–बकरियों में सामान्यतः इस समय अत्याधिक चारा खाने से फड़किया रोग होने की प्रबल संभावना रहती हैं। फड़किया रोग से प्रभावित अधिकांश भेड़–बकरियों की तीन दिवस के अन्दर मृत्यु हो जाती है। कुछ पशुओं की तो अत्याधिक चारा खाने के कुछ ही घंटों में मौत हो जाती है। पशुपालक इस रोग को लक्षणों के आधार पर आसानी से पहचान सकते हैं। इसमें अधिकतर मोटे व स्वस्थ पशु प्रभावित होते हैं, प्रभावित पशुओं को आफरा आता है, टांगों में लकवे के कारण पशु के चलने में दिक्कत आती हैं, जमीन पर गिर जाता है और जमीन पर टांगे मारता रहता है, पेट दर्द के कारण पशु कराहता है और जमीन पर गिरने के कुछ ही समय में मृत्यु हो जाती है।

इसके अतिरिक्त इस माह भेड़–बकरियों में दस्त रोग भी सामान्य तौर पर देखा जाता है। दस्त रोग से पशु के शरीर में पानी की कमी हो जाती है और लवण के अनुपात में गड़बडी से पशु विशेषकर मेमनों में काफी मृत्युदर देखी जाती है।

इन रोगों के अलावा वर्षा में भीगने की वजह से भेड़–बकरियों में न्यूमोनिया होने की बहुत संभावना रहती है जिसकी वजह से छोटे दूध पीते मेमनों में मौत की आंशका रहती है। न्यूमोनिया से प्रभावित पशु को बुखार आता है, सुस्त होकर चरना–पीना बंद कर देता हैं, तेज सांस चलती है और 3–4 दिन में मृत्यु हो सकती है।

अतः जुलाई माह में भेड़–बकरी–मेमनों को स्वस्थ रखने के लिए पशुपालक ये प्रबंध करें :

- फड़किया रोग से बचाने के लिए भेड़–बकरियों को नियत्रित मात्रा में चारा चरायें। यदि चारागाह में पर्याप्त चारा है तो कम समय के लिए पशुओं को चराएं।
- यदि पशु दस्त रोग से प्रभावित है तो तुरंत चिकित्सक से सम्पर्क कर रोग का ईलाज करायें।
- न्यूमोनिया से बचाव के लिए पशुओं को वर्षा में भीगने से बचाएं।
- यदि पशुओं को फड़किया के टीके नहीं लगवाए है तो अभी भी टीके लगवाए जा सकते हैं।

–प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

मानसून में मुर्गी पालन कैसे करें

पशुपालक भाइयों! जैसा कि आपको पता है कि अपने प्रदेश में जुलाई माह में मानसून आने वाला हैं अतः यहां यह महत्वपूर्ण हो जाता हैं कि मानसून में मुर्गीपालन कैसे करें। मानसून में मुर्गी पालकों की पक्षियों की मृत्यु दर को लेकर शिकायत रहती है। इसलिए मानसून में मुर्गियों से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना, विकास व मृत्युदर नियंत्रण और एफ सी आर के संदर्भ में उनके रख–रखाव व देखभाल सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है।

बरसात के मौसम में उचित रख–रखाव नहीं होने पर मुर्गीपालकों को काफी हानि होती हैं। बरसात के मौसम में मुर्गियों की सही देखभाल हेतु बरसात शुरू होने से पूर्व मुर्गी फार्मो की मरम्मत का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जैसे छतों में दरार/रिसाव, फर्श मरम्मत, पर्दे आदि सभी तैयार हो जानी चाहिए। मुर्गी फार्मो में प्लास्टिक के पर्दे लगाने का दोहरा फायदा मुर्गीपालकों को मिलता हैं। पहला बरसात की बौछारों से बचाव व दूसरा तेज हवाओं को रोकना। बरसात के मौसम में मुर्गियों के आहार में फफूंद रोग हो जाना आम बात है इसलिए बरसात के मौसम में आहार ज्यादा नहीं खरीदना चाहिए। इसके लिए सूखा व ताजा आहार पहले से एकत्रित कर स्टोर में रख लेना चाहिए। मुर्गीपालन में इन बातों का ध्यान रखें कि मूंगफली की खली में फंगस का असर बहुत जल्दी होता हैं तथा इसके बचाव हेतु एन्टीफंगस का प्रयोग करना चाहिए। इस बात का भी विशेष ध्यान रखें कि मुर्गियों के आहार में नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से ज्यादा ना हो।

मुर्गी फार्म में पर्दे जाली से एक से डेढ़ फीट दूरी पर लगाने चाहिए ताकि पर्दो से पानी का रिसाव सीधे मुर्गियों के बिछावन को गीला नहीं कर पाये। गीले बिछावन को निकाल कर नया तथा सूखा बिछावन/लकड़ी बुरादा से तुरन्त बदलना चाहिए। गीले बिछावन के कारण कॉक्सिडियोसिस जैसी बीमारियों की सम्भावना बढ़ जाती है जिसके कारण चूजों में मृत्युदर की सम्भावना बढ़ जाती हैं तथा विकास भी धीमा हो जाता हैं। अगर बिछावन ज्यादा गीला हो जाये तो इसमें चूना मिलाना चाहिए इससे बिछावन की नमी थोड़ी कम हो जायेगी। बिछावन ज्यादा सख्त हो जाये तो उसे निकालकर बाहर फिंकवा दें तथा उसकी जगह सूखी बिछावन रखवा दें । बरसात के मौसम में बिछावन की गहराई बढ़ा दें तथा प्रत्येक मुर्गी को आधा वर्ग फीट की जगह और बढ़ा दें। फर्श पर 2–3 इंच सूखी रेत डालकर उस पर बिछावन बिछाने से जमीन की नमी से बिछावन का बचाव हो जाता हैं। आहार का भंडारण गृह (स्टोर) भी सीलन रहित होना चाहिए। इसलिए आहार को रखने से पहले जमीन पर लकड़ी के

पटड़े रखते हैं फिर उस पर आहार की बोरियां रखते हैं। इससे आहार में जमीन की नमी नहीं पहुंचती हैं। भंडारण गृह में रखी आहार की बोरी को 10 दिन के अंदर अवश्य उपयोग में ले लेना चाहिए।

बरसात में मक्खियों का प्रकोप बढ़ जाता हैं जिससे अन्य बीमारियों के फैलने की सम्भावना रहती हैं। इसलिए मैलाथियान का छिड़काव शैड के बाहर करवाने से इनका बचाव हो सकता हैं। जहां बीट ज्यादा गीली हो जाये वहां सूखी रेत बीट पर डाल देनी चाहिए। मक्खियों की रोकथाम हेतु बीट के ऊपर थोड़ा फिनायल का स्प्रे करने से मदद मिलती है।

बरसात में दस्त की बीमारी अधिक बढ़ जाती हैं जो कि पेट में कीड़ो की मौजूदगी से होती हैं। इसके लिए शाम के समय पिपराजीन साल्ट का प्रयोग सही रहता है। मुर्गी फार्मों की खाली जगह/गड्डे आदि में मिट्टी भरवाने से मच्छरों, कीड़ों आदि के प्रजनन को रोक सकते हैं। पानी के सभी भंडारण/स्त्रोत यानि पानी की टंकी, कुएं के पानी को कीटाणु रहित रखने के लिए ब्लीचिंग पाउडर या लाल दवा (पोटेशियम परमेंगनेट) का प्रयोग पानी में करना चाहिए। मुर्गीपालक भाई, बरसात के मौसम में इन सभी बातों का ध्यान रख कर मुर्गी पालन से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. महेन्द्र सिंह मील एवं गितेश मिश्रा
वेटनरी कॉलेज, नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर।

भैंस पालन में प्रसूति सम्बन्धी सामान्य समस्याएं

पशुओं के प्रसूति काल से संबधित समस्याओं तथा अन्य समस्याओं का पशुओं की उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पशुपालकों को पशुओं की प्रसूति काल से सबंधित बीमारियों तथा अन्य मौसमी एवं चयापचयी बीमारियों का सामान्य ज्ञान होना चाहिए, जिससे पशुपालकों को आर्थिक क्षति का सामना न करना पड़े। यहां कुछ सामान्य परेशानियों का समाधान दिया जा रहा है। जिनका आमतौर पर सामना करना पड़ता है।

भैंस गर्मी में नहीं आती न ही कोई लक्षण दिखाती है, क्या करें!

भैंस की तुलना कभी भी गाय के साथ नहीं करनी चाहिए, क्योंकि भैंसों में गर्मी के लक्षण बहुत हल्के होते हैं या सामान्यतया छुपे हुए होते हैं, हां, गर्मी में आने से 4–5 दिन पहले भैंस के थन दूध से भरे हुए दिखाई देते हैं, जिसे सामान्य भाषा में भैंस का डोका भरना भी कहते हैं। आमतौर पर डोका भरने को इस बात का सूचक माना जाता है कि भैंस गर्मी में आने वाली है। इसलिए यदि डोका भरने के 4–5 दिन बाद भैंस तार देती है तो समझ लीजिए की भैंस गर्मी में है। अतः ग्याभिन करवा सकते हैं।

गर्मी में आने के कितने समय बाद भैंस को ग्याभिन करवाएं! तथा बाद में क्या सावधानी रखें!

वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार भैंस को गर्मी के अन्तिम घण्टों में ग्याभिन करवाना सही रहता है। चूंकि भैंस आमतौर पर 24 घण्टे तक गर्मी में रहती है, गर्मी में आने के 10–12 घण्टे बाद का समय उपयुक्त है। 12 घण्टे के समय अंतराल में दो बार ग्याभिन कराना लाभप्रद होता है।

ग्याभिन करवाने के बाद भैंस को ठण्डे वातावरण में रखें तथा ज्यादा दौड़–भाग से बचायें। यदि गर्मी का मौसम है तो भैंस को दिन में दो बार ठण्डे पानी से नहलायें, खूब पानी पिलायें, भैंस के आहार में उचित दाना मिश्रण, हरा चारा तथा खनिज मिश्रण का समावेश भी करें।

भैंस में ग्याभ ठहरता नहीं है, बार बार गर्मी में आती है, कोई उचित उपाय बताएं!

ग्याभ नहीं ठहरने के कई कारण हो सकते हैं –

- भैंस का गर्मी में आने का सही समय पर पता नहीं चल पाया हो, जिससे हो सकता है गर्भाधान सही समय पर नहीं किया गया हो
- बच्चेदानी में संक्रमण होने के कारण भी कई बार भैंस नहीं ठहरती, बच्चेदानी में संक्रमण का पता गर्मी के समय दिए जाने वाले तार से भी चल सकता है। सामान्यतया ये तार पानी की तरह साफ होना चाहिए, यदि ये तार सफेद या छीछालेदार है तो मान लें कि बच्चेदानी में संक्रमण है, इसलिए गर्भाधान से पहले उचित उपचार करवा लें।
- बहुत से अंतः एवं ब्राह्य परजीवी पशु में पाए जाते हैं, जिससे पशु पर्याप्त मात्रा में भोजन न ले पाने या कमजोर पाचन क्रिया के कारण अक्सर दुबला–पतला रह जाता है, व पशु के जननांगों का भी उचित रूप से विकास नहीं हो पाता।
- बाह्य परजीवी भी पशुओं के कमजोर शारीरिक विकास के लिए उत्तरदायी होते हैं।
- कुपोषित आहार, विभिन्न खनिज लवणों तथा आवश्यक विटामिन की कमी के कारण मादा पशु गर्मी में नहीं आ पाते या खुल के गर्मी में नहीं आते जिससे पशुपालक उन्हें देख नहीं पाता। अगर पशु गर्मी में आ रहा है तब भी बहुत बार खनिज लवणों की कमी के कारण गर्भधारण नहीं कर पाता।
- कई बार पशुपालक किसी डॉक्टर की सलाह लिए बिना ही अनुचित और अत्यधिक मात्रा में अनुचित दवाओं का प्रयोग या हॉर्मोन्स का उपयोग पशु को देने के लिए कर लेता है जो पशु के जननागों पर विपरीत असर डालता है।
- कृत्रिम गर्भाधान के समय रखा जाने वाला टीका या हार्मोन्स की गुणवत्ता ठीक न हो या गर्भाधान के समय काम में लिया जाने वाला भैंसा या झोटा नंपुसक या कम जनन क्षमता वाला हो।

भैंस खुंडी नस्ल की है तो इसे किस नस्ल के झोटे से ग्याभिन करवाना चाहिए!

भैंस खुंडी नस्ल की यानी मुर्राह नस्ल की है, जिसे हरियाणा नस्ल की भैंस माना जाता है। यह सुदंरता तथा दूध के आधार पर बहुत अच्छी नस्ल है। अपनी भैंस को ग्याभिन करवाने के लिए इन बातों को प्राथमिकता देवें।

यदि आपकी भैंस देशी या मिश्रित नस्ल की है तो आपके क्षेत्र में मौजूद किसी नस्ल के झोटे से ग्याभिन करवाएं। यदि आपकी नस्ल किसी शुद्ध नस्ल की है जैसे की आपकी भैंस खुंडी नस्ल की है तो उसी नस्ल के झोटे से ग्याभिन करवाएं।

हमने जब भैंस खरीदी तो हमें खुंडी ही बताया गया था, खुंडी नस्ल की सही पहचान क्या है!

नाम से ही जाहिर होता है, खुंडी नस्ल या मुर्राह भैंस के सींग छोटे और गोलाई में अंदर की ओर कसकर मुडे होते है इस नस्ल की भैंस का पूरा शरीर काले रंग का तथा पूंछ भी काली होती है। इस नस्ल की भैंस का आगे का हिस्सा संकरा तथा पीछे का हिस्सा चौड़ा होता है तथा औसत दूध उत्पादन की क्षमता 1500–2500 किग्रा प्रति ब्यांत होती हैं।

हमारी भैंस में ब्यांत के दिन पूरे हो गए, फिर भी अभी तक बच्चा पैदा नहीं हुआ! क्या कारण है!

इसका मुख्य कारण तो यह है की पशुपालक कभी भी ग्याभिन करवाने की तारीख कहीं नही लिखता है। जिससे सही सही तारीख बता पाना मुश्किल होता है कि कितने महीने की ग्याभिन है। भैंस लगभग 305–315 दिन में बच्चा देती है, जिसमें एक सप्ताह ऊपर नीचे हो सकता है। इससे ज्यादा समय लग रहा है तो तुरंत पशुचिकित्सक से संपर्क करें, क्योंकि हो सकता है कोई अन्य दिक्कत हो जैसे बच्चेदानी का घूम जाना, बच्चे का अंदर ही मर जाना या बच्चे का विकृत होना।

क्या भैंस के बच्चे को जेर गिरने से पहले दूध पिला सकते हैं!

पशुपालकों में यह धारणा है कि जब तक जेर न गिरे बच्चे को दूध नहीं पिलाना चाहिए यह बिल्कुल गलत है। ब्यांत के बाद पहला दूध बच्चे के लिए अमृत के समान होता है जो उसे रोगों से लड़ने की ताकत देता है अतः जन्म के एक घण्टे तक बच्चे को पहला दूध या खीस देना चाहिए।

हमारी भैंस का बच्चा मरा हुआ ही पैदा हुआ था, क्या हम दूध निकालने के टीके का नियमित रूप से उपयोग कर सकते हैं!

सामान्य रूप से पशुपालक दूध निकालने के लिए ओक्सीटोक्सिन टीके का उपयोग वहां करते हैं जहां पशु का बच्चा मर गया है या पशु दूध चढा रहा है। हालांकि यह हार्मोन्स टीका है जो कि दूध में ज्यादा समय मौजूद नहीं रह पाता तो इंसानों के स्वास्थ्य पर दूध काम में लेने पर कोई भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन यह यह क्रूर प्रक्रिया है इसलिए टीके का उपयोग कर दूध निकालने की प्रक्रिया काम में नहीं लेनी चाहिए।

–डॉ. मनोहर सैन, डॉ. सीताराम एवं डॉ. रामचन्द्र
राजुवास, बीकानेर (9829542066)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जुलाई, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी	बाँसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, दौसा, झुंझुनू, सवाई माधोपुर, अलवर, सिरोही, बाड़मेर, चूरू, अजमेर, सीकर, पाली
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू, नागौर, अजमेर, कोटा पाली, सिरोही, जोधपुर, अलवर
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, बाड़मेर, जालोर, हनुमानगढ़, जोधपुर
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, भरतपुर, दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, सिरोही, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग (लंगड़ा बुखार)	गौवंश, भैंस	जयपुर, बीकानेर, झुंझुनू, अलवर, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, सीकर, श्रीगंगानगर
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, अलवर, नागौर, धौलपुर, झुन्झुनू, अजमेर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, कोटा, बून्दी, भरतपुर
थाइलेरिओसिस, बबेसिओसिस	गौवंश	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बून्दी, चूरू
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं फीता –कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, ऊँट	बीकानेर, सीकर, धौलपुर, अलवर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, राजसमन्द, भरतपुर, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो.अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

बकरी पालन अपनाकर झाब्बरसिंह ने जीवन को बनाया बेहतर

राजस्थान में बकरीपालन ग्रामीण क्षेत्र में एक प्रमुख आजीविका का स्त्रोत है। बारानी खेती, कम वर्षा मानसून आधारित खेती के कारण पशुपालन किसानों की आजीविका का आधार है। इस कारण नागौर जिले में बकरी पालन को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि बकरी पालन से गाय एवं भैंस पालन की तुला में कम खर्च करके अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। बकरी पालन का ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत किया है नागौर जिले के लाड़नूं तहसील के कोयल गांव के झाब्बरसिंह ने जो पूर्व में वर्षा आधारित खेती पर निर्भर थे। आय के नए स्त्रोत की तलाश में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) में सम्पर्क करके वैज्ञानिकों से बकरीपालन के बारे में उचित जानकारी प्राप्त की गयी। वंहीं से प्रेरित होकर उन्होंनें सिरोही नस्ल का बकरी पालन शुरू किया। जिसके लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों से बकरी पालन हेतु समय समय पर कृमिनाशक, टीकाकरण एवं उचित पोषण हेतु जानकारी प्राप्त करके अपने कार्य को आगे बढ़ाया। साथ ही केन्द्र की मदद से अजोला घास का उत्पादन भी लेना शुरू किया। वर्तमान में झाब्बरसिंह के पास 50 के करीब बकरे एवं बकरियां है जिनसे वे मेमने प्राप्त कर रहे है । मेमने 5000 रू., बकरी 10,000–15,000 रूपये में विक्रय करते है। इस प्रकार झाब्बरसिंह प्रतिवर्ष 2.5 से 3.00 लाख रू. की आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। गांव में रोजगार के साधन कम होने के बावजूद भी झाब्बरसिंह ने गांव में ही रहकर बकरी पालन द्वारा सरलता से अपना जीवन निर्वाह करने का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। **सम्पर्क–झाब्बरसिंह, लाडनूं (नागौर) मो. 9413412348**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

वर्षा ऋतु में पशुओं की उचित देखभाल जरूरी

मानसून आगमन के साथ ही वर्षा का दौर शुरू हो जाएगा। इस दौरान वातावरण में अधिक आर्द्रता होने के कारण तापमान में अधिक उतार–चढ़ाव रहता है। वातावरण बदलाव के कारण पशु की पाचन क्रिया और रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है। ऐसे में अनेक रोग पशुओं को घेर लेते हैं। पशुओं को मौसमी प्रकोप से बचाने के लिए उनकी उचित देखभाल जरूरी है।

पशुओं को साफ पानी ही पिलाना चाहिए, खेतों के समीप गड्ढ़े या जोहड़ का पानी पिलाने से परहेज करना चाहिए, क्योंकि खेतो से खरपतवार एवं कीटनाशक रिसकर इन गड्ढ़ों में आ जाती हैं। पशुओं को हरा चारा अच्छी तरह झाड़ कर खिलाना चाहिए, क्योंकि वर्षा ऋतु में घोंघों का प्रकोप अधिक होता है और पशुशाला या पशुवाड़े में गोबर व मूत्र की निकासी का उचित प्रबंध करना चाहिए। पशुशाला को दिन में एक बार फिनायल के घोल से अवश्य साफ करना चाहिए। बरसात में मक्खियों का प्रकोप बढ़ जाता है अतः मक्खियों की रोकथाम जरूरी है। अगर पशुओं में घाव हो तो उन पर मक्खियां नहीं बैठने देनी चाहिए। पशुशाला की खिड़कियां खुली रखनी चाहिए तथा बिजली के पंखों का प्रयोग करना चाहिए, जिससे पशुओं को गर्मी तथा उमस से राहत मिले। इन दिनों पशुओं में संक्रमित बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है अतः पशुओं में इन रोगों से बचाव के टीके अवश्य लगवा लेवें। पशुशाला में कीचड़ जमा ना होने दें तथा सूखा रखें वरना अधिक कीचड़ की वजह से पशुओं के खूरों में संक्रमण हो सकता है। अन्तः परजीवियों से बचाने के लिए पशुओं में उनके वजन के अनुसार कृमिनाशक दवाओं का उपयोग करना चाहिए। तथा बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए आइवरमेक्टिन या परजीविनाशक घोल का प्रयोग करना चाहिए। बारिश के मौसम में पशुओं को बाहर नही चाराना चाहिए, क्योंकि बारिश में कई तरह के कीड़े जमीन में से निकल कर घास पर बैठ जाते हैं। बरसात में पशुओं में दाद, खाज या खुजली आदि का खतरा भी बढ़ जाता है। अतः इनसे पशुओं को बचाने के लिए प्रभावित पशुओं को स्वस्थ्य पशुओं से अलग रखना चाहिए तथा प्रभावित पशुओं का पशुचिकित्सक की सलाह से उपचार कराना चाहिए।

–प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

मुस्कान !

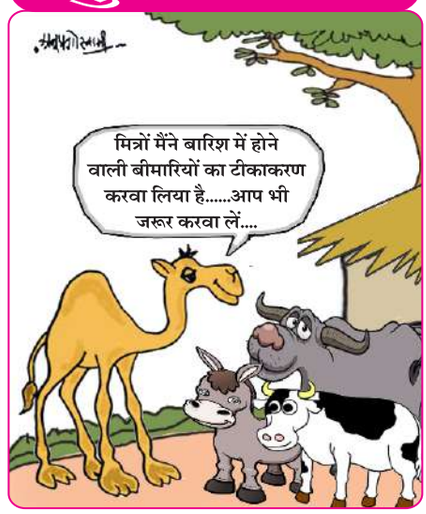

''धीणे री बात्यां''

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित रेडियो कार्यक्रम

विषय	वार्ताकार	दिनांक व समय
पशुचिकित्सा शिक्षा में अवसर	प्रो. आर.के. सिंह अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	गुरुवार 16 जुलाई, 2020 सायं 5.30 से 6.00 बजे

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224